आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/24-26

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 13 अंक : 5 जनवरी-2026 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास

कुलगुरु सन्देश

प्रदेश के पशुधन विकास में विश्वविद्यालय की प्रेरक भूमिका

सभी पशुपालक एवं कृषक भाईयों और बहनों को नूतन वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं।

राजस्थान जैसे शुष्क एवं अर्द्ध–शुष्क प्रदेश में जहाँ कृषि मुख्यतः मानसून पर निर्भर रहती है, पशुपालन ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ के रूप में स्थापित हुआ है। पशुपालन न केवल ग्रामीण परिवारों की आजीविका का प्रमुख आधार है, बल्कि पोषण सुरक्षा, रोजगार सृजन एवं सामाजिक–आर्थिक सशक्तिकरण में भी अहम भूमिका निभा रहा है। समय के साथ पशुपालन पारंपरिक गतिविधि से आगे बढ़कर विज्ञान, तकनीक एवं नवाचार से युक्त एक आधुनिक और लाभकारी क्षेत्र के रूप में विकसित हो रहा है। इस परिवर्तन में राजस्थान पशु चिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। विश्वविद्यालय राज्य में पशुपालन शिक्षा, अनुसंधान एवं विस्तार गतिविधियों का एक अग्रणी केंद्र है। यहाँ संचालित शैक्षणिक कार्यक्रमों, पशुधन अनुसंधान केंद्रों, पशु विज्ञान केंद्रों एवं कृषि विज्ञान केंद्र के माध्यम से उन्नत नस्ल सुधार, कृत्रिम गर्भाधान, संतुलित पशु पोषण, रोग निदान एवं नियंत्रण, टीकाकरण तथा जैव–सुरक्षा उपायों को वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ जमीनी स्तर तक पहुँचाया जा रहा है। इन प्रयासों के परिणामस्वरूप पशुधन की उत्पादकता में वृद्धि के साथ–साथ पशुपालकों की आय में भी निरंतर सुधार हो रहा है। राजस्थान देश की प्रमुख एवं विशिष्ट पशु नस्लों की जन्मभूमि रहा है। राठी, थारपारकर, साहीवाल तथा कांकरेज गौवंश जैसी नस्लें राज्य की अमूल्य पशुधन धरोहर हैं। विश्वविद्यालय इन नस्लों के संरक्षण, संवर्धन एवं आनुवंशिक सुधार हेतु वैज्ञानिक अनुसंधान एवं विकास कार्यों में निरंतर संलग्न है, जिससे इनकी उत्पादक क्षमता में वृद्धि हो सके तथा जैव विविधता सुरक्षित बनी रहे। पशुपालकों तक सेवाओं की त्वरित एवं प्रभावी पहुँच सुनिश्चित करने के उद्देश्य से विश्वविद्यालय द्वारा टोल–फ्री हेल्पलाइन सेवा संचालित की जा रही है। साथ ही विश्वविद्यालय की वेबसाइट, फेसबुक पेज, यूट्यूब चैनल एवं अन्य डिजिटल माध्यमों के माध्यम से प्रशिक्षण सामग्री, वैज्ञानिक परामर्श एवं नवीन तकनीकों की जानकारी सीधे किसानों एवं पशुपालकों तक पहुँचाई जा रही है। इन डिजिटल पहलुओं ने दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले पशुपालकों को विशेषज्ञ मार्गदर्शन से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। डेयरी, मुर्गीपालन, बकरीपालन एवं अन्य पशुपालन आधारित गतिविधियों में मूल्य संवर्धन, प्रसंस्करण एवं विपणन को प्रोत्साहित कर युवाओं एवं महिलाओं के लिए स्वरोजगार एवं उद्यमिता के नए अवसर सृजित किए जा रहे हैं। टेली–पशुचिकित्सा सेवाओं, डिजिटल तकनीक एवं नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से पशुपालन को अधिक वैज्ञानिक, सुलभ एवं लाभकारी बनाया जा रहा है, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के नए आयाम विकसित हो रहे हैं। विश्वविद्यालय पशुपालन को टिकाऊ एवं पर्यावरण–अनुकूल बनाने हेतु जैव–अपशिष्ट प्रबंधन, गोबर गैस संयंत्र, जैविक खाद उत्पादन तथा प्राकृतिक खेती के साथ पशुपालन के समन्वय को भी प्रोत्साहित कर रहा है। इससे पर्यावरण संरक्षण के साथ–साथ ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी सुदृढ़ आधार प्राप्त हो रहा है।

डॉ. सुमंत व्यास

माननीय मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा राजुवास प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।

–महात्मा गांधी

विश्वविद्यालय समाचार

माननीय मुख्यमंत्री द्वारा वेटरनरी विश्वविद्यालय की प्रदर्शनी का अवलोकन

वेटरनरी विश्वविद्यालय बीकानेर द्वारा 16 दिसम्बर को लूनकरनसर में राज्य सरकार के दो वर्ष पूर्ण होने पर निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया के निर्देशन में विकास कार्यों एवं उपब्धियों पर आयोजित प्रदर्शनी में वेटरनरी विश्वविद्यालय की स्टॉल का प्रदर्शन किया गया। माननीय मुख्यमंत्री, राजस्थान सरकार भजन लाल शर्मा द्वारा प्रदर्शनी एवं विकास उपलब्धियों का अवलोकन किया गया। अवलोकन के दौरान माननीय मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा ने राठी एवं थारपारकर देशी गोवंश नस्लों की जानकारी प्राप्त की। प्रदर्शनी अवलोकन के दौरान खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री सुमित गोदारा, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री गजेन्द्र सिंह खींवसर, विधायक बीकानेर (पूर्व) सिद्धि कुमारी, विधायक बीकानेर (पश्चिम) जेठानन्द व्यास, जनप्रतिनिधि, जिला कलेक्टर, बीकानेर नम्रता वृष्णि, कुलसचिव राजुवास, बीकानेर पंकज शर्मा एवं प्रशासनिक अधिकारी मौजूद रहे। प्रदर्शनी के दौरान मॉडल, प्रकाशन एवं पोस्टर के माध्यम से विश्वविद्यालय की उपलब्धियों को प्रदर्शित किया गया। प्रदर्शनी का आयोजन अतिरिक्त निदेशक प्रसार डॉ. देवीसिंह एवं सहायक निदेशक प्रसार डॉ. संजय सिंह के देखरेख में किया गया।

वेटरनरी विश्वविद्यालय ने मनाया राष्ट्रीय किसान दिवस

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा 23 दिसम्बर को राष्ट्रीय किसान दिवस मनाया गया। कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास ने अपने उद्बोधन में कहा कि चौधरी चरण सिंह ने अपना संपूर्ण जीवन भारतीयता और ग्रामीण परिवेश की मर्यादा में जिया। कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास ने बताया कि चौधरी चरण सिंह ने अपने कार्यकाल में कृषि क्षेत्र के उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी और किसानों के हितों में कई किसान हितैषी नीतियों का मसौदा तैयार किया था। वह एक ऐसे नेता थे जिन्होंने देश की संसद में किसानों की आवाज को बुलंद किया था। कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास ने चौधरी चरण सिंह की जीवनी पर प्रकाश डालते हुए उनके द्वारा लिखित किताबों एवं प्रकाशनों का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव एवं किसान कल्याण नीतियों का भी जिक्र किया। निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने अपने स्वागत उद्बोधन में बताया कि यह दिन हमारे अन्नदाताओं की मेहनत, संघर्ष और समर्पण को याद करने का अवसर प्रदान करता है एवं किसान दिवस को मनाने का प्रमुख उद्देश्य किसानों के योगदान को सम्मान देना और समाज को उनके महत्व के प्रति जागरूक करना है। इस अवसर पर प्रो. धूड़िया ने विकसित भारत गारंटी फॉर रोजगार एंड आजीविका मिशन (वी.बी.जी–रामजी) योजना को विस्तार से बताया। इस अवसर पर भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा (नई दिल्ली) द्वारा किसानों के साथ संवाद बैठक का प्रसारण हाईब्रिड मोड़ पर किया गया जिसमें कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री भारत सरकार भागीरथ चौधरी का अभिभाषण प्रस्तुत किया गया साथ ही सचिव डेयर एवं महानिदेशक आई.सी.ए.आर. डॉ. एम.एल. जाट और सचिव कृषि एवं किसान कल्याण (भारत सरकार) देवेश चतुर्वेदी ने भी अपना उद्बोधन दिया। निदेशक अनुसंधान प्रो. बी.एन. श्रृंगी ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया एवं मंच का संचालन सहायक निदेशक प्रसार डॉ. संजय सिंह द्वारा किया गया।

बकरी पालन पर सात दिवसीय उद्यमिता प्रशिक्षण आयोजित

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा 26 नवम्बर से 02 दिसम्बर तक सात दिवसीय बकरी पालन उद्यमशीलता प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के समापन सत्र के मुख्य अतिथि कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास ने प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि पशुपालकों में उद्यमशीलता तथा पशुपालन से आर्थिक उत्थान हेतु विश्वविद्यालय द्वारा कौशल विकास कार्यक्रम की पहल की गई ताकि राज्य के विभिन्न जिलों से इच्छुक प्रशिक्षणार्थी प्रशिक्षण प्राप्त कर स्वरोजगार अपना सके। कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास ने कहा कि प्रशिक्षण प्राप्त पशुपालक वैज्ञानिक तरीकों से बकरी पालन कर अपने आप को बकरी पालक उद्यमी बना सकते है। निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने बकरी पालन के क्षेत्र में बुनियादी जानकारी प्रदान करते हुए प्रशिक्षण का विस्तृत विवरण बताया और कहा कि सात दिवसीय प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षणार्थियों को बकरी की विभिन्न नस्लों, आहार, आवास और स्वास्थ्य प्रबंधन के साथ–साथ बकरी पालन के लिए सरकारी योजनाओं एवं ऋण प्रणाली से अवगत करवाया गया। समापन सत्र के दौरान विश्वविद्यालय के कुलसचिव पंकज शर्मा ने भी प्रशिक्षर्णियों को सम्बोधित किया। प्रशिक्षण समन्वयक डॉ. मोहन लाल चौधरी ने बताया कि बीकानेर, हनुमानगढ़, पाली, बासंवाड़ा उदयपुर, चूरू, सिरोही, ब्यावर चित्तौड़गढ़, श्रीगंगानगर जिलो के 24 पशुपालकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया जिनको प्रशिक्षण के उपरांत प्रशिक्षण संदर्शिका एवं प्रमाण पत्र वितरित कियें गये।

शैक्षणिक, शोध एवं प्रसार कार्यों की समीक्षा बैठक का आयोजन

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर में 8 दिसम्बर को विश्वविद्यालय कें शैक्षणिक, शोध एवं प्रसार गतिविधियों का कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास की अध्यक्षता में समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया। कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास ने बैठक में पशुचिकित्सा के सुदृढीकरण, उपलब्ध संसाधन के समुचित उपयोग, शोध पत्रों के नियमित संधारण, वन्य जीवों की चिकित्सा रिकॉर्ड, विश्वविद्यालय के पेटेंट, कॉपीराईट की उचित एवं समयबद्ध पत्र संग्रहण हेतु आवश्यक सुझाव एवं दिशा निर्देश प्रदान किए। कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास ने निर्धारित पाठ्यक्रमों का समयबद्ध एवं सुचारू संचालन एवं विश्वविद्यालय द्वारा गोद लिए गांवों में सामाजिक सरोकार के कार्यो की प्रगति हेतु भी सुझाव दिये। बैठक के दौरान वेटरनरी विश्वविद्यालय के वित्त नियंत्रक विनोद कुमार यादव, अधिष्ठाता वेटरनरी महाविद्यालय बीकानेर प्रो. हेमन्त दाधीच, निदेशक पी.एम.ई. प्रो. उर्मिला पानू, निदेशक अनुसंधान प्रो. बी.एन. श्रृंगी, निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया, अधिष्ठाता डेयरी महाविद्यालय बीकानेर प्रो. राहुल सिंह पाल, परीक्षा नियंत्रक प्रो. मनीषा माथुर, अधिष्ठाता छात्र कल्याण डॉ. पंकज कुमार थानवी, निदेशक कार्य डॉ. एन.एस. राठौड़, सहायक अधिष्ठाता छात्र कल्याण डॉ. अशोक डांगी, उपस्थित रहे।

कुक्कुट पालन पर सात दिवसीय उद्यमिता प्रशिक्षण का आयोजन

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा 06 से 12 दिसम्बर तक सात दिवसीय कुक्कुट पालन उद्यमशीलता प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास ने प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि मुर्गीपालन ऐसा व्यवसास है जिसको अतिलघु स्तर से इण्डस्ट्री स्तर तक अपनाया जा सकता है। मुर्गीपालन से कम समय में ही व्यवसाय स्तर को बढ़ाया जा सकता है। पशुपालक मुर्गीपालन की वैज्ञानिक विधियों को अपनाकर इस क्षेत्र से अधिक से अधिक आर्थिक लाभ अर्जित कर सकते है। केन्द्र व राज्य सरकार कुक्कुट पालन आधारित विभिन्न योजनाओं को संचालित कर रही है जिनका पशुपालक/किसान प्रशिक्षण उपरांत लाभ उठा सकते है और आर्थिक स्वावलंबन की ओर अग्रसर हो सकते है। निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने कुक्कुट पालन के क्षेत्र में बुनियादी जानकारी प्रदान करते हुए प्रशिक्षण का विस्तृत विवरण बताया और कहा कि सात दिवसीय प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षणार्थियों को कुक्कुट की विभिन्न देशी नस्लों की जानकारी, आहार व स्वास्थ्य की व्यवस्था, कुक्कुट पालन के लिए उपयुक्त स्थान व बाजार की मांग और आपूर्ति के साथ–साथ कुक्कुट पालन की सरकारी योजनाओं व ऋण प्रणाली से अवगत करवाया। प्रशिक्षण समन्वयक डॉ. अरूण कुमार झीरवाल ने बताया की इस प्रशिक्षण में उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, डुंगरपुर, हनुमानगढ़, सीकर, झुंझनु, करौली, बीकानेर जिलों के 10 पशुपालकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया जिनको प्रशिक्षण के उपरान्त प्रशिक्षण संदर्शिका एवं प्रमाण पत्र वितरित किये गए।

वन्य जीवों के बचाव की तकनीक पर कार्यशाला

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर के वन्य जीव अध्ययन एवं प्रबंधन केन्द्र द्वारा "वन्य जीवों के बचाव तकनीको" विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन 12 दिसम्बर को किया गया। कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास ने कहा की वन्य जीव, मानव जीवन का अभिन्न हिस्सा है और बिना वन्य जीव के मानव जीवन संभव नही है। प्राकृतिक आपदा एवं सड़क दुर्घटना के बाद वन्य जीवो को मिलने वाली प्राथमिक वेटरनरी चिकित्सा एवं देख रेख उनके बचाव का महत्वपूर्ण हिस्सा है। उन्होने सभी प्रतिभागियों को वन्य जीव उपचार की तकनीकों को इस कार्यशाला के माध्यम से सीखने हेतु प्रेरित किया। कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास ने आमजन से वन्यजीवों के बारे में अधिकाधिक सही जानकारी पशुचिकित्सकों से साझा करने का आग्रह किया ताकि वन्य जीवों को अकारण होने वाली मौतो से बचाया जा सके। उपवन संरक्षक श्री संदीप कुमार छलानी ने बताया कि बचाव की तकनीकें पशुचिकित्सकों को सीखनी अतिआवश्यक है क्योकि जिस तरह से कृषि योग्य भूमि बढ़ रही है उससे वन्यजीवों का विचरण होना कम होता जा रहा है जिससे वन्य जीवों को अधिक खतरा हाने लगा है। कार्यवाहक निदेशक अनुसंधान डॉ. राजेश कुमार धूड़िया ने बताया कि वन्यजीव हमारे सनातन धर्म की परंपरा का अभिन्न हिस्सा है। हमारे सभी अवतारों और देवी देवताओं के वाहन वन्य जीव ही है। अधिष्ठाता डॉ. हेमन्त दाधीच ने सर्प प्रजाती के महत्व एवं उनके बचाव की तकनीक को आमजन तक पहुंचाने का आग्रह किया तथा ये भी बताया की आधुनिक तकनीकों का उपयोग बढ़ाते हुऐं वन्यजीवों का अधिकाधिक बचाव किया जा सकता है। वन विभाग की टीम ने प्रतियोगियों को वन्यजीवों के बचाव के तरीकों को प्रायोगिक तौर पर प्रदर्शित किया जिसमें डार्ट गन, ब्लो पाइप, स्नेक केचिंग तकनीकें शामिल है। केन्द्र के मुख्य अन्वेक्षक डॉ. जे.पी. कछावा, डॉ. महेन्द्र तंवर तथा डॉ. संघर्ष दुबे ने वन्यजीवों के पुनर्वास की तकनीकों पर व्याख्यान दिया।

विश्वविद्यालय द्वारा विभिन्न गांवो में विशेष पशुचिकित्सा शिविर

वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर द्वारा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली से अनुसूचित जाति उपयोजना के अंतर्गत विशेष पशुचिकित्सा व बांझ निवारण शिविरों के आयोजन किये जा रहे है। ये शिविर बीकानेर जिले की सभी तहसीलों में लगाए जा रहें है। इस हेतु जिले के सम्बल गांवों का चयन किया गया है। इस श्रृंखला के अन्तर्गत माह दिसम्बर, 2025 में पांच गांवों यथा भैरूपावा, गीगासर, गेरसर, कल्याणसर अगुणा और पेमासर में यह विशेष शिविर लगाये गये। उक्त शिविरों में कुल 5538 पशुओं का उपचार किया गया जिनमें गाय, भैंस, ऊंट, भेड़ व बकरियों शामिल है। उक्त सभी गांवो में इन शिविरों को लेकर काफी उत्साह देखा गया है और ग्रामीणों ने बढ़–चढ़ कर इन शिविरों में भाग लिया और इसका लाभ उठाया। साथ ही ग्रामीणों को गोष्ठी के माध्यम से पशुओं में होने वाले रोग एपं उनकी रोकथाम व प्रबंधन के बारे में जागरूक किया गया। निदेशक क्लिनिक्स प्रो. प्रवीण बिश्नोई के नेतृत्व में किये जा रहे शिविरों में विश्वविद्यालय के विभिन्न चिकित्सकों, स्नातकोत्तर व इंटर्नशिप छात्राओं ने अपना योगदान दिया।

गाढ़वाला में देशी गौवंश संरक्षण जागरूकता शिविर

वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के पशु जैव विविधता संरक्षण केंद्र द्वारा स्थानीय देशी गोवंश नस्लों के संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए गाड़वाला गांव में 10 दिसम्बर को पशुपालकों के लिए जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया। केंद्र की प्रभारी अधिकारी डॉ. रजनी अरोड़ा ने पशुपालकों को देशी गौवंश का महत्व, देशी गौवंश का संरक्षण करने के उपायें के बारे में जानकारी प्रदान की। देशी नस्लों की संख्या में कृषि विधियों में परिवर्तन, तकनीकी परिवर्तन, अर्थव्यवस्था में परिवर्तन, प्राकृतिक आपदाएं, देशी गौवंश को संरक्षण करने के प्रमुख उपायों के महत्व एवं प्रभाव के बारे में बताया। इस दौरान केन्द्र के द्वारा प्रकाशित पैंपलेट एवं राजुवास बीकानेर द्वारा निर्मित मिनरल मिश्रण पाउडर पैकेट का वितरण भी किया गया।

पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर द्वारा 4 एवं 30–31 दिसम्बर को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय व दो दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 58 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ द्वारा 30 दिसम्बर को गांव रियावाली एवं 31 दिसम्बर को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 114 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जालौर

पशु विज्ञान केन्द्र, जालौर द्वारा 18 एवं 23 दिसम्बर को गांव मांडोली एवं कोलार में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में 49 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर द्वारा 15 एवं 22 दिसम्बर को गांव राईका बासनी एवं विराई गांवों में तथा दिनांक 8–9 दिसम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में 85 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 9 दिसम्बर को केन्द्र परिसर में तथा 29 दिसम्बर को गांव फलोज में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 55 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ द्वारा 4, 6, 8, 11, 15, 19, 22, 26 एवं 29 दिसम्बर को गांव पारेवड़ा, भानिपुरा, साहवा, मोथसरन, गालड़, हंसियावास, खुड़ी, जोड़ी पट्टा सांत्यु एवं टिडियासर गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 207 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही द्वारा 8, 15, 23, 24 एवं 26 दिसम्बर को गांव सानेश्वरजी, बागसीन, पड़ीव, रामपुरा एवं उड़ गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 134 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुंदा

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुंदा द्वारा 4 एवं 17 दिसम्बर को गांव पीपलवास एवं जाफरखेड़ा गांवों में तथा दिनांक 24 दिसम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 90 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़)

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर जिला हनुमानगढ़ द्वारा 19 एवं 31 दिसम्बर को गांव गांधीबड़ी एवं फेफाना गांवो में तथा 17–23 दिसम्बर को केन्द्र परिसर में कृषक एवं पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 69 किसानों एवं पशुपालकों ने भाग लिया।

पशुपालन शिक्षा का महत्व और किसानों की प्रगति

भारत की अर्थव्यवस्था में किसान और पशु दोनों की महत्वपूर्ण भूमिका है। खेती और पशुपालन न केवल ग्रामीण परिवारों की आय का मुख्य आधार हैं, बल्कि पोषण, रोजगार और सामाजिक सुरक्षा भी प्रदान करते हैं। आज के समय में जब कृषि आधुनिक तकनीकों की ओर बढ़ रही है, तब किसानों को पशु–शिक्षा देना अत्यंत आवश्यक बन गया है।

क्यों जरूरी है पशुपालन शिक्षा

ग्रामीण क्षेत्रों में कई बार किसान पारंपरिक अनुभव पर निर्भर रहते हैं। लेकिन बदलते मौसम, नई बीमारियाँ और आधुनिक उत्पादन तकनीक की वजह से वैज्ञानिक जानकारी का होना जरूरी है।

पशु–शिक्षा से किसानों को लाभ :

- ❖ रोगों की जल्दी पहचानः पशु शिक्षा प्राप्त किसान अपने पशुओं में शुरुआती लक्षण पहचान लेते हैं, जिससे बीमारी बिगड़ने से पहले ही उपचार शुरू हो जाता है और नुकसान कम होता है।
- ❖ सही पोषण और आहार प्रबंधनः पशुओं की उम्र, कार्यक्षमता और उत्पादन के अनुसार संतुलित आहार देना सीखकर उत्पादन बढ़ता है, चाहे दूध हो, मांस हो या अंडे।
- ❖ प्रजनन–प्रबंधन में सुधारः शिक्षित किसान हीट डिटेक्शन, सही समय पर इंसेमिनेशन और गर्भधारण प्रबंधन कर पाते हैं, जिससे बछड़े / मेढ़े / बकरी के बच्चों की संख्या बढ़ती है।
- ❖ दवा और टीकाकरण का सही उपयोग : पशु शिक्षा किसानों को सही दवा, सही मात्रा और सही समय पर टीकाकरण की जानकारी देती है, जिससे रोग फैलने का खतरा कम होता है।
- ❖ उत्पादन में वृद्धि और आर्थिक लाभः तकनीकी ज्ञान अपनाकर किसान अधिक दूध, अंडे, ऊन या मांस प्राप्त करते हैं, जिससे आय में निरंतर वृद्धि होती है।
- ❖ आपदा एवं मौसम प्रबंधनः हीट स्ट्रेस, ठंड, बाढ़ जैसी स्थितियों में पशुओं की सुरक्षा और प्रबंधन की सही जानकारी मिलती है।
- ❖ वैज्ञानिक पशुपालन की ओर बढ़ावा : नई तकनीकें –IoT sensors, automatic feeders, mobile apps– जैसी आधुनिक सुविधाएँ समझकर किसान स्मार्ट फार्मिंग की ओर बढ़ते हैं।
- ❖ पशुओं का महत्वः किसान की असली पूंजी भारत में अधिकांश छोटे और सीमांत किसानों की आर्थिक रीढ़ उनके पशु ही होते हैं।

किसान शिक्षा के आधुनिक साधन :– आज किसान केवल अनुभव पर निर्भर नहींकृवे तकनीक से जुड़े हैं। किसान शिक्षा के आधुनिक साधन :–

- ➢ मोबाइल ऐप्सः– किसान ऐप, किसान सुविधा जैसे ऐप्स मौसम, बाजार भाव, दवाओं, रोगों और खेती की तकनीकों की जानकारी देते हैं। 24X7 मार्गदर्शन कहीं भी, कभी भी उपलब्ध।
- ➢ डिजिटल प्लेटफॉर्म और ई–लर्निंग :– यूट्यूब चैनल, वेब पोर्टल, ऑनलाइन कोर्स, वेबिनार किसान को वैज्ञानिक खेती और पशुपालन सीखने में मदद करते हैं। वीडियो आधारित सीखना आसान और प्रभावी होता है।
- ➢ सोशल मीडिया समूह : – व्हाट्सअप ग्रुप, फेसबुक पेज, टेलीग्राम चैनल पर विशेषज्ञों और किसानों से तुरंत सलाह मिलती है। नए रोग, तकनीक और सरकारी योजनाओं की जानकारी सबसे तेजी से मिलती है। पशु विज्ञान केंद्र में व्यावहारिक प्रशिक्षण, डेमो, फील्ड विजिट और वैज्ञानिकों के साथ बातचीत का मौका मिलता है।
- ➢ रेडियो एवं कम्युनिटी रेडियोः कृषि कार्यक्रम, पशु स्वास्थ्य कार्यक्रम, मौसम पूर्वानुमान और बाजार समाचार आसानी से ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुँचते हैं।
- ➢ टेलीविजन और कृषि चौनलः डीडी किसान और अन्य चौनलों पर उन्नत तकनीक, नई नस्लें, टीकाकरण कार्यक्रम और आधुनिक पशुपालन पद्धतियों की जानकारी दी जाती है।
- ➢ सरकारी हेल्पलाइन और कॉल सेंटरः किसान कॉल सेंटर (1800–180–1551), पर किसान सीधे विशेषज्ञों से बात कर सकते हैं। तत्काल समस्या समाधान और सलाह | राजुवास टोल फ्री नम्बर 01512540021
- ➢ किसान मेलें और प्रदर्शनियाँः कृषि और पशुपालन मेलों में नई मशीनें, आधुनिक तकनीकें, नस्ल सुधार और दवाओं के बारे में जानकारी मिलती है।
- ➢ ड्रोन एवं IoT आधारित स्मार्ट फार्मिंगः ड्रोन से सर्वे, आई.ओ.टी सेंसर से स्वास्थ्य मॉनिटिरिंग, स्मार्ट फीडर–इनसे फैक्ट– आधारित सीखने के अवसर बढ़े हैं।
- ➢ ई–समृद्धि और डिजिटल भुगतान प्रणालियाँः किसान ऑनलाइन उपकरण खरीदना, दवाएँ ऑर्डर करना, बैंकिंग और बीमा सेवाएँ आसानी से सीखते हैं।

शिक्षा से समृद्ध किसानः विकसित भारत 2047 की ओर– शिक्षा किसान की प्रगति की सबसे मजबूत नींव है, क्योंकि आधुनिक कृषि और पशुपालन का ज्ञान उसे आत्मनिर्भर और तकनीक–सक्षम बनाता है। वैज्ञानिक तरीकों, आधुनिक उपकरणों और डिजिटल प्लेटफॉर्म के उपयोग से किसान न केवल उत्पादन बढ़ाता है बल्कि आर्थिक रूप से भी अधिक सक्षम बनता है। पशु–शिक्षा से पशुओं का स्वास्थ्य सुधरता है, रोगों की रोकथाम होती है और दूध, मांस तथा अंडा उत्पादन में निरंतर वृद्धि मिलती है, जिससे उसकी आय बढ़ती है। आधुनिक प्रशिक्षण, मोबाइल ऐप्स, मौसम और बाजार जानकारी से किसानों के निर्णय और भी सटीक और समयानुसार होते हैं। शिक्षित किसान जोखिम प्रबंधन, बीमा और सरकारी योजनाओं का बेहतर उपयोग कर अपने परिवार और समुदाय को सुरक्षित भविष्य देता है। जब किसान ज्ञानवान, स्वस्थ और समृद्ध होगा, तभी भारत 2047 तक एक विकसित राष्ट्र बनने के अपने लक्ष्य को सच्चाई में बदल सकेगा।

निष्कर्ष :–

पशुपालन शिक्षा किसानों को आर्थिक, सामाजिक और पोषण संबंधी मजबूती प्रदान करती है। आधुनिक तकनीक, वैज्ञानिक ज्ञान और उचित प्रशिक्षण के माध्यम से किसान अपने पशुओं को स्वस्थ रखकर उत्पादन क्षमता और आय में उल्लेखनीय वृद्धि कर सकते हैं। इस दृष्टि से पशु केवल आजीविका का साधन नहीं, बल्कि किसान के भविष्य सुधार और प्रगति का मजबूत आधार हैं। यदि किसान वैज्ञानिक पशुपालन तकनीकें अपनाएँ, तो न केवल उनका परिवार सुरक्षित और समृद्ध होगा, बल्कि देश भी आर्थिक रूप से अधिक आत्मनिर्भर बनेगा। ग्रामीण युवा और नवीन पीढ़ी जब कृषि एवं पशुपालन शिक्षा को अपनाएगी, तभी भारत 2047 तक कृषि एवं डेयरी क्षेत्र में वैश्विक नेतृत्व प्राप्त करने की दिशा में एक सशक्त कदम बढ़ा सकेगा।

"शिक्षित किसान, स्वस्थ पशु और दोगुना उत्पादन"

डॉ. संध्या मोरवाल
सहायक आचार्य, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

भेड़ और बकरियों में संक्रामक एक्थीमा रोग

भारत में विशेष रूप से लघु व सीमांत किसानों के लिए छोटे पशुओं जैसे भेड़ और बकरियां ग्रामीण अर्थव्यवस्था, खाद्य सुरक्षा और आजीविका के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। बकरियों को उनकी अनुकूलनशीलता, कम लागत और विविध उपयोगिता के कारण गरीब आदमी की गाय कहा जाता है, जबकि भेड़ें ऊन और मांस प्रदान करती है। भेड़ और बकरी में होने वाली बीमारियों का गंभीर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है, जिसके परिणामस्वरूप भारी आर्थिक नुकसान होता है। भेड़ों और बकरियों को प्रभावित करने वाले प्राथमिक रोगों को मोटे तौर पर विषाणुजनित, जीवाणुजनित और परजीवी संक्रमणों में वर्गीकृत किया जा सकता है। विषाणुजनित बीमारियों में संक्रामक एक्थीमा एक प्रमुख रोग है। छोटे जुगाली करने वाले पशुओं भेड़ और बकरी में इस बीमारी को संक्रामक एक्थीमा, ओ.आर.एफ, पपड़ीदार त्वचाशोथ या मुंह के छाले रोग भी कहते है। यह विषाणुजनित रोग है जो की पैरापॉक्स वायरस के कारण होता है। यह वायरस बहुत मजबूत होता है और लंबे समय तक शुष्क परिस्थितियों में जीवित रह सकता है। यह वायरस मुख्य रूप से होंठों, थूथन पर छाले, अल्सर और पपड़ीदार घाव बनाता है, जो आसानी से फैलता है। मुख्य रूप से युवा पशुओं के होंठों को प्रभावित करता है। इसके घाव विशिष्ट होते हैं और निदान की पुष्टि पीसीआर परीक्षण द्वारा की जाती है। शुष्क मौसम के दौरान यह अक्सर कम उम्र के पशुओ में देखा जाता है।

प्रमुख लक्षणः

- ❖ होंठों और थूथन पर लालिमा, पानी भरे छाले, फिर उनमें पस भरकर पपड़ी बनना प्रमुख लक्षण है। ये घाव नाक, कान, टाँगों और थनों पर भी फैल सकते है। इसके साथ ही पशुओ में तेज बुखार भी आ सकता है।
- ❖ मुंह, होठों, थूथन और नाक के आसपास दाने और फिर सख्त पपड़ी बन जाती है।
- ❖ दर्दनाक घावों के कारण पशु चारा खाना कम या बंद कर देते हैं, जिससे उनका वजन गिर सकता है और द्वितीयक बैक्टीरियल संक्रमण भी हो सकता है।
- ❖ कभी–कभी यह संक्रमण पैरों (खुरों के पास), थनों, पलकों और जननांगों तक फैल सकता है।
- ❖ यदि मेमने के मुंह से संक्रमण भेड़ के थनों तक फैलता है, तो थनैला रोग हो सकता है।

संचरणः यह एक जूनोटिक रोग है जो की सीधे संपर्क से, संक्रमित पशुओं के संपर्क से या फिर पशुओं को संभालने वाले व्यक्तियों से मनुष्यों में भी फैल सकता है।

उपचारः

इस वायरस का कोई विशिष्ट एंटीवायरल उपचार नहीं है, लेकिन लक्षणों के आधार पर उपचार किया जाता है।

- ❖ घावों को पोटेशियम परमैंगनेट (लाल दवा) के घोल से साफ किया जा सकता है।
- ❖ प्रभावित हिस्से पर बोरोग्लिसराइड या एंटीसेप्टिक क्रीम का उपयोग करें।
- ❖ द्वितीयक जीवाणु संक्रमण को रोकने के लिए एंटीबायोटिक (एनरोफ्लोक्सासिन) दिए जा सकते है।
- ❖ नीम के पत्तों को पानी में उबालकर उस पानी से घाव धोना और हल्दी का उपयोग करना भी फायदेमंद माना जाता है।

बचाव और रोकथामः

टीकाकरणः स्वस्थ पशुओ को इस रोग के खिलाफ उपलब्ध टीकों से सुरक्षित किया जा सकता है। लगभग 4 महीने की उम्र में या मानसून से 1–2 महीने पहले बूस्टर खुराक लाभदायक रहती है।

पृथक्करणः संक्रमित पशुओ को तुरंत झुंड से अलग कर देना चाहिए ताकि यह रोग न फैले।

जूनोटिक जोखिमः यह एक जूनोटिक बीमारी है, यानी यह पशुओ से मनुष्यों में फैल सकती है। मनुष्य आमतौर पर संक्रमित पशुओ के सीधे संपर्क में आने से वायरस से संक्रमित होते हैं, विशेष रूप से उन जानवरों से जिनके होंठ, थूथन या थनों पर सक्रिय घाव होते हैं। यह वायरस सूक्ष्म घावों, खरोंचों या फटी हुई त्वचा के माध्यम से मानव शरीर में प्रवेश करता है। मनुष्यों में शुरुआत उंगलियों या हाथों पर एक छोटे, लाल उभार (पैप्यूल) के रूप में होती है, जो मवाद से भरे छाले (पुस्ट्यूल) या रिसने वाली गांठ में बदल जाता है, फिर एक मोटी, पपड़ीदार परत बन जाती है, जिसके आसपास अक्सर सूजी हुई लसीका ग्रंथियां होती हैं, और आमतौर पर हफ्तों में ठीक हो जाता है, जिससे एक निशान रह जाता है, हालांकि यह कभी–कभी आंख को भी प्रभावित कर सकता है। इसलिए संक्रमित पशु को छूते समय दस्ताने पहनें और स्वच्छता का पूरा ध्यान रखें। एक बार ठीक होने के बाद भी व्यक्ति पुनः संक्रमित हो सकता है।

डॉ. दीपिका धूड़िया
वरिष्ठ सहायक आचार्य, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

जैव विविधता का सतत उपयोग एवं रणनीतियां

जैव विविधता का सतत उपयोग का अर्थ है: पौधों, पशुओं, सूक्ष्मजीवों और प्राकृतिक संसाधनों का इस प्रकार उपयोग करना कि वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताएं पूरी हो, लेकिन भविष्य की पीढ़ियों के लिए ये संसाधन सुरक्षित बने रहें।

सतत उपयोग के मुख्य सिंद्धात:

- प्राकृतिक संसाधनों का सीमित और जिम्मेदार उपयोग।
- वनों की कटाई के स्थान पर पुनर्वनीकरण को बढ़ावा।
- वन्य जीवों और उनके आवासों का संरक्षण।
- कृषि, मत्स्य पालन और पशुपालन में पर्यावरण अनुकूल तरीकों का प्रयोग।
- पारंपरिक ज्ञान और स्थानीय समुदायों की भागीदारी।
- यह संरक्षण और उपयोगिता के बीच संतुलन बना है जिसमें नीतिंया, संरक्षित क्षेत्र और सतत प्रथाएं शामिल है।

महत्व:

- पारिस्थितिक संतुलन बना रहता है।
- भोजन, औषधि और आजीविका के संसाधन सुरक्षित रहते हैं।
- जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने में सहायता मिलती है।
- प्राकृतिक विरासत का संरक्षण होता है।

सतत उपयोग को बेहतर ढंग से समझना :

- **आनुवंशिक विविधता:** फसलों और पशुओं की नस्लों में मौजूद विभिन्नता को बचाए रखना।
- **प्रजाति विविधता:** पौधों और पशुओं की विभिन्न प्रजातियों के बीच संतुलन।
- **पारिस्थितिकी तंत्र विविधता:** जंगलों, झीलों और समुद्रों जैसे पूरे तंत्र का संरक्षण।

जैव विविधता का हनन: हमारे ग्रह की जैविक संपदा तेजी से घट रही है और इसके लिए मानवीय गतिविधियों को जिम्मेदार ठहराया जा रहा है। पिछले बीस वर्षो में ही 27 प्रजातियां विलुप्त हो चुकी हैं। वर्तमान की सभी पक्षी प्रजातियों में से 12 प्रतिशत सभी स्तनपायी प्रजातियों में से 23 प्रतिशत सभी उभयचर प्रजातियों में से 32 प्रतिशत और सभी जिम्नोस्पर्म प्रजातियों में से 31 प्रतिशत विलुप्त होने के खतरे में है।

जैव विविधता हनन के कारण:

आवास की हानि और विखंडन: यह पशुओं और पौधों के विलुप्त होने का सबसे महत्वपूर्ण कारण है। आवास के नुकसान के सबसे नाटकीय उदाहरण उष्णकटिबंधीय वर्षावनों से मिलते हैं। कभी पृथ्वी की सतह के 14 प्रतिशत से अधिक क्षेत्र को कवर करने वाले ये वर्षावन अब केवल 6 प्रतिशत क्षेत्र को कवर करते हैं। जब विभिन्न मानवीय गतिविधियों के कारण बड़े आवास छोटे–छोटे टुकड़ों में टूट जाते है तो बड़े क्षेत्रों की आवश्यकता वाले स्तनधारी और पक्षी एवं प्रवायी आदतों वाले कुछ पशु बुरी तरह प्रभावित होते हैं, जिससे जनसंख्या में गिरावट आती है।

अति–शोषण: मनुष्य हमेशा से ही भोजन और आश्रय के लिए प्रकृति पर निर्भर रहा है, लेकिन जब आवश्यकता लालच में बदल जाती है तो प्राकृतिक संसाधनों का अति–शोषण होता है।

विदेशी प्रजातियों का आक्रमण: जब विदेशी प्रजातियां अनजाने में या जानबुझकर किसी भी उद्देश्य से लाई जाती है तो उनमें से कुछ आक्रामक हो जाती है और स्थानीय प्रजातियों के पतन या विलुप्ति का कारण बनती है। पूर्वी अफ्रीका की विक्टोरिया झील में लाई गई नील नदी की पर्च के कारण अंततः झील में मौजूद सिक्लिड मछलियों की 200 से ज्यादा प्रजातियों का एक पारिस्थितिक रूप से अनूठा समूह विलुप्त हो गया।

सह–विलुप्ति: जब कोइ प्रजाति विलुप्त हो जाती है तो उससे जुड़ी वनस्पति और पशु प्रजातियों भी अनिवार्य रूप से विलुप्त हो जाती है। जब कोई मेजबान मछली प्रजाति विलुप्त हो जाती है तो उसके परजीवियों का अनूठा समूह भी विलुप्त हो जाता है।

निष्कर्ष: जैव विविधता का सतत उपयोग केवल एक वैज्ञानिक अवधारणा नही हैं, बल्कि यह हमारे जीने का एक तरीका होना चाहिए। जब हम प्रकृति से उतना ही लेते है जितना वह दोबारा पैदा कर सके, तभी हम एक सुरक्षित भविष्य की नींव रखते हैं।

डॉ. रजनी अरोड़ा एवं डॉ. स्नेहा चौधरी
वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

सफलता की कहानी

पशु विज्ञान केन्द्र से जुड़कर बढ़ी दुग्ध उत्पादन क्षमता: हरीश बने मिसाल

जोधपुर जिले के प्रगतिशील पशुपालक हरीश बोराणा आज क्षेत्र के अन्य पशुपालकों के लिए प्रेरणा का स्रोत बन चुके हैं। पशुपालन को परंपरागत तरीके से आगे बढ़ाने के साथ–साथ उन्होंने इसे वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अपनाया और इसका श्रेय वे पशु विज्ञान केंद्र, जोधपुर से मिले मार्गदर्शन को देते हैं। हरीश बोराणा के पास वर्तमान में 80 से अधिक गायें हैं, जिनमें से 50 से 55 गायें दुधारू अवस्था में हैं। इसके अतिरिक्त उनके पास बछड़े एवं बछड़ियाँ भी हैं, जिनकी उचित देखभाल कर वे अपने पशुधन को लगातार विकसित कर रहे हैं। वैज्ञानिक प्रबंधन के परिणामस्वरूप उनके पशुओं से प्रतिदिन उल्लेखनीय मात्रा में दूध उत्पादन हो रहा है। वर्तमान में उनके यहाँ लगभग 300 किलो दूध सुबह तथा शाम को लगभग 250 किलो दूध का उत्पादन हो रहा है, जो क्षेत्र में एक सराहनीय उपलब्धि मानी जा सकती है। हरीश बोराणा लंबे समय से पशु विज्ञान केंद्र, जोधपुर से जुड़े हुए हैं और यहाँ समय–समय पर आयोजित होने वाले प्रशिक्षण शिविरों, जागरूकता कार्यक्रमों एवं तकनीकी सत्रों में नियमित भागीदारी करते रहे हैं। प्रशिक्षण के दौरान उन्हें संतुलित पशु आहार प्रबंधन, हरे चारे का उपयोग, दुग्ध उत्पादन बढ़ाने की तकनीकें, पशुओं का स्वास्थ्य परीक्षण, टीकाकरण एवं रोग प्रबंधन की वैज्ञानिक जानकारी प्राप्त हुई, जिसे उन्होंने अपने पशुपालन कार्य में सफलतापूर्वक लागू किया। इन वैज्ञानिक तरीकों को अपनाने का सकारात्मक प्रभाव यह रहा कि न केवल उनकी दुधारू गायों की उत्पादकता में वृद्धि हुई, बल्कि पशुओं का स्वास्थ्य भी बेहतर हुआ। दूध उत्पादन बढ़ने से उनकी आर्थिक आमदनी में उल्लेखनीय सुधार हुआ और पशुपालन उनके लिए एक लाभकारी व्यवसाय के रूप में स्थापित हो गया। हरीश बोराणा का कहना है कि पशु विज्ञान केंद्र द्वारा आयोजित किये जा रहे प्रशिक्षण और मार्गदर्शन पशुपालकों के लिए अत्यंत उपयोगी है। यदि पशुपालक वैज्ञानिक तरीके अपनाएँ और नियमित पशुपालन प्रशिक्षण प्राप्त करें तो पशुपालन से अच्छी आय अर्जित की जा सकती है। उनकी यह सफलता कहानी यह दर्शाती है कि पशु विज्ञान केंद्र के सहयोग, सतत प्रशिक्षण और मेहनत से पशुपालन न केवल आजीविका का साधन बन सकता है, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में आत्मनिर्भरता और रोजगार संवर्धन का मजबूत आधार भी बन सकता है।

सम्पर्क: हरीश बोराणा
आकाशवाणी केन्द्र के पास, जोधपुर (मो. 9216618396)

निदेशक की कलम से...

पशुओं में एंटिबायोटिक के उचित उपयोग में पशुपालकों की भूमिका

एंटीबायोटिक दवाओं ने पशु स्वास्थ्य की रक्षा, संक्रामक रोगों के नियंत्रण तथा पशुधन उत्पादन बढ़ाने में ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इनके उचित प्रयोग से न केवल पशुओं की मृत्यु दर में कमी आई है बल्कि दूध, मांस और अंडों जैसे पशु उत्पादों के उत्पादन और गुणवत्ता में भी सुधार हुआ है। किंतु हाल के दशकों में खाद्य पशुओं में एंटीबायोटिक दवाओं के अत्यधिक, अनियंत्रित एवं अवैज्ञानिक उपयोग के कारण एंटीबायोटिक प्रतिरोध एक गंभीर वैश्विक चुनौती के रूप में उभरकर सामने आया है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इसे मानव स्वास्थ्य के लिए प्रमुख खतरों में शामिल किया है। एंटीबायोटिक प्रतिरोध वह स्थिति है जिसमें जीवाणु एंटीबायोटिक दवाओं के प्रति असंवेदनशील हो जाते हैं, जिससे सामान्य संक्रमणों का उपचार भी कठिन हो जाता है। यह समस्या केवल पशु स्वास्थ्य तक सीमित नहीं है, बल्कि मानव स्वास्थ्य, खाद्य सुरक्षा, पर्यावरण संरक्षण और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को भी प्रभावित करती है। खाद्य पशुओं में विकसित ये प्रतिरोधी जीवाणु दूध, मांस और अंडों के माध्यम से मानव शरीर में प्रवेश कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त, पशुओं के सीधे संपर्क में आने वाले किसान और पशुपालक भी जोखिम में रहते हैं। पशुओं का गोबर, मूत्र और अपशिष्ट जब बिना उपचार के खेतों या जल स्रोतों में पहुँचते हैं, तो मिट्टी और जल भी प्रदूषित हो सकते हैं। इस चुनौती के लिए पशुपालक व किसान स्तर पर होने वाला गलत एंटीबायोटिक का उपयोग प्रमुख कारण है। बिना पशुचिकित्सक की सलाह दवाओं का प्रयोग, गलत मात्रा देना, उपचार को बीच में ही बंद कर देना तथा रोग की रोकथाम या उत्पादन बढ़ाने के लिए एंटीबायोटिक का नियमित उपयोग प्रतिरोध को बढ़ावा देता है। इसलिए एंटीबायोटिक प्रतिरोध की रोकथाम में किसानों व पशुपालकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। एंटीबायोटिक प्रतिरोध को नियंत्रित करने का सबसे प्रभावी और स्थायी उपाय रोग निवारण है। इसके अंतर्गत स्वच्छ एवं हवादार पशु आवास, संतुलित और पोषक आहार, स्वच्छ पेयजल, नियमित टीकाकरण, जैव–सुरक्षा उपाय तथा उचित प्रबंधन पद्धतियों को अपनाना आवश्यक है। नए पशुओं को झुंड में शामिल करने से पहले पृथक्करण करना भी रोगों के प्रसार को रोकने में सहायक होता है। जब पशुओं में उपचार वास्तव में जरूरी हो तभी एंटीबायोटिक दवाओं का उपयोग किया जाना चाहिए और वह भी केवल योग्य पशुचिकित्सक की सलाह से। एंटीबायोटिक दवा की सही मात्रा, सही अवधि और सही तरीके से प्रयोग अत्यंत आवश्यक है। उपचार को बीच में छोड़ देना प्रतिरोध के खतरे को कई गुना बढ़ा देता है। साथ ही दवाओं के विथड्रॉल पीरियड का पालन करना भी अनिवार्य है, ताकि दूध और मांस में दवा के अवशेष न रहें और उपभोक्ताओं को सुरक्षित खाद्य पदार्थ मिल सके। किसानों को प्रशिक्षण और जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से जिम्मेदार एंटीबायोटिक उपयोग के लाभ समझाना आवश्यक है। विवेकपूर्ण उपयोग से पशु अधिक स्वस्थ रहते हैं, उत्पादन लागत कम होती है और उत्पादों की गुणवत्ता बनी रहती है। अंततः किसान, एंटीबायोटिक प्रतिरोध से निपटने की श्रृंखला की सबसे महत्वपूर्ण कड़ी है और उनके प्रयासों से ही सुरक्षित पशुपालन, सुरक्षित खाद्य प्रणाली और स्वस्थ समाज का निर्माण संभव है।

प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर

"धीणे री बात्यां"
पशुपालकों के लिए रेडियो कार्यक्रम
माह के तीसरे गुरुवार को
सायं 5.30 से 6.00 बजे तक
प्रदेश के 17 आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारण

पशुचिकित्सा सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करने के लिए
टोल फ्री हैल्पलाईन
1800 180 6224

मुख्य संपादक
प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया
संपादक
डॉ. संजय सिंह
डॉ. वैशाली
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवा में

....

....

....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया